क्षत्रचूडामणि में तत्त्वज्ञान की महिमा

-प्रो. वीरसागर जैन

तत्त्वज्ञानविहीनानां नैर्ग्रन्थमपि निष्फलम् | -क्षत्रचूडामणि, 6/18

अर्थ- तत्त्वज्ञान से रहित जीवों का निर्ग्रन्थ दीक्षा ग्रहण करना भी निष्फल है |

आचार्य वादीभसिंहसूरि द्वारा रचित 'क्षत्रचूडामणि' ग्रन्थ की यह पंक्ति बहुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण है | महत्त्वपूर्ण ही नहीं, क्रान्तिकारी भी है | इसमें आचार्यदेव ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में जोर देकर लिखा है कि यदि तत्त्वज्ञान नहीं किया तो जीव का निर्ग्रन्थ दीक्षा ग्रहण करना भी निष्फल है |

इस पंक्ति से कोई भी व्यक्ति सरलता से समझ सकता है कि मोक्षमार्ग में तत्त्वज्ञान की कितनी अधिक आवश्यकता होती है | तथा तत्त्वज्ञान के बिना मुनिपद जैसी क्रियाएँ भी निष्फल रह जाती हैं |

तत्त्वज्ञान के सम्बन्ध में ऐसी ही एक और बड़ी महत्त्वपूर्ण सूक्ति 'क्षत्रचूडामणि' में निम्नलिखित भी मिलती है, जो बारम्बार पठनीय-मननीय है-

तत्त्वज्ञानजलं नो चेत् क्रोधाग्निः केन शाम्यति | -क्षत्रचूडामणि, 5/9

अर्थ- यदि आपके पास तत्त्वज्ञान का जल नहीं है तो क्रोधाग्नि को कैसे शान्त करोगे ?

सत्य है, तत्त्वज्ञान-रहित जीव सदैव अपने अन्तर में अनन्त क्रोध से सन्तप्त होता रहता है | अनन्त क्रोध की अग्नि को शान्त करने का एक मात्र उपाय है- तत्त्वज्ञान का शीतल जल | तत्त्वज्ञान के इस शीतल जल के बिना जीव की क्रोधरूपी अग्नि कभी बुझ ही नहीं सकती |

यहाँ क्रोध की बात कही है, किन्तु क्रोध की भांति मान, माया और लोभ की अग्नि को शान्त करने का भी अमोघ उपाय एक तत्त्वज्ञान ही है -ऐसा समझ लेना चाहिए | क्रोध की भांति मान, माया, लोभ की अग्नियाँ भी अत्यन्त सन्तापकारी होती हैं, अनन्त जीव निरन्तर इनमें जल रहे हैं | तत्त्वज्ञान का शीतल जल ही इन सर्व कषायों की महा अग्नियों को शान्त करने में समर्थ है, अन्य कुछ भी नहीं |

इसी प्रकार कामाग्नि, शोकाग्नि आदि सर्व के सम्बन्ध में भी समझ लेना चाहिए | 'क्षत्रचूडामणि' की निम्नलिखित सूक्ति आचार्यदेव के इसी अभिप्राय को व्यक्त कर रही है-

तत्त्वज्ञानजलेनाथ शोकाग्निं निरवापयत् | -क्षत्रचूडामणि, 2/60

अर्थ- तत्त्वज्ञान रूपी जल से ही शोकरूपी अग्नि को बुझाया जा सकता है |

तत्त्वज्ञान के सम्बन्ध में इसी प्रकार के और भी अनेक कथन 'क्षत्रचूडामणि' में मिलते हैं, जो गम्भीरता से बारम्बार चिन्तन-मनन करने योग्य हैं | उनमें से निम्नलिखित दो कथन और मुझे बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते हैं | यथा-

1. तत्त्वज्ञानं हि जीवानां लोकद्वयसुखावहम् | -क्षत्रचूडामणि, 3/18

अर्थ- तत्त्वज्ञान ही जीवों को दोनों लोकों में सुख प्रदान कर सकता है |

2. तत्त्वज्ञानविहीनानां दुःखमेव हि शाश्वतम् | -क्षत्रचूडामणि, 6/2

अर्थ- तत्त्वज्ञान से रहित जीवों को सदा दुःख ही दुःख मिलता है |

इन दोनों कथनों की विशेषता यह है कि ये दोनों तत्त्वज्ञान की एक ही बात को अस्ति-नास्ति दोनों रूपों में सबलतापूर्वक प्रस्तुत कर रहे हैं | पहला कह रहा है कि तत्त्वज्ञान से ही दोनों लोकों में सुख प्राप्त होता है और दूसरा कह रहा है कि तत्त्वज्ञान के बिना सदा दुःख ही दुःख मिलता है |

तात्पर्य यह है कि तत्त्वज्ञान से सुख और तत्त्वज्ञान के अभाव में दुःख -यह बात एकदम पक्की है, इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है | हमारे पास एक ही विकल्प है- तत्त्वज्ञान प्राप्त करो या अनन्त दुःख | अन्य कोई विकल्प नहीं है, संसार की कोई भी शक्ति, तीर्थकरादि भी इस विषय में हमारी कोई सहायता नहीं कर सकते | केवल और केवल तत्त्वज्ञान ही हमें सुखी बना सकता है, सदा सुखी बनाए रख सकता है |

क्षत्रचूडामणिकार आचार्य वादीभसिंहसूरि आगे भी इसी प्रकार की एक और महत्वपूर्ण सूक्ति लिखकर यह सिद्ध कर रहे हैं कि ज्ञानी जीव जीवन में कभी दुखी नहीं होते -इसका एक मात्र कारण यह है कि वे उस समय तुरन्त अपने तत्त्वज्ञान को जागृत कर लेते हैं | यथा-

तत्त्वज्ञानं हि जागर्ति विदुषामार्तिसम्भवे | -क्षत्रचूडामणि, 1/57

अर्थ- जीवन में दुःख आने पर ज्ञानी जीव अपने तत्त्वज्ञान को जागृत कर लेते हैं |

हम पुराणों में भी पढ़ते हैं कि ज्ञानियों, मुनिराजों तक के जीवन में बड़े-बड़े दुःख आया करते हैं, परन्तु यह उनका तत्त्वज्ञान ही है कि वे उस कष्ट की चिन्ता नहीं करते, उससे कभी अशान्त नहीं होते | तत्त्वज्ञान में बड़े-बड़े दुःखों से रक्षा करने की अद्भुत शक्ति है |

यहाँ प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि तत्त्वज्ञान क्या है, उसे कैसे प्राप्त करें तो इसका उत्तर भी क्षत्रचूडामणि में ही इस प्रकार उपलब्ध होता है-

तत्त्वज्ञानं च जीवादितत्त्वयाथात्म्यनिश्चयः | -क्षत्रचूडामणि, 1/

अर्थ- तत्त्वज्ञान के लिए जीवादि सप्त तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप का निश्चय करना चाहिए |

कहने का तात्पर्य यह है कि जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष -ये सात प्रयोजनभूत तत्त्व हैं | तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के लिए हमें इन सातों तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप का निश्चय करना चाहिए |

तत्त्वार्थसूत्र, समयसार आदि ग्रन्थों के अध्ययन-मनन द्वारा इन सातों तत्त्वों का यथार्थ स्वरूप सुगमतापूर्वक समझा जा सकता है | वर्तमान में हमें सर्व प्रकार से अवसर भी प्राप्त हुआ है, अतः प्रमाद करना उचित नहीं है | यदि इस भव में हम तत्त्वज्ञान अर्जित नहीं कर सके तो फिर बहुत अधिक पश्चात्ताप करना होगा

| इस संसार में हमारा कोई सहायक नहीं हो सकेगा | एक तत्त्वज्ञान ही हमें सुखी रखने में समर्थ सिद्ध होगा | उसे भी कैसे भी कोटि उपाय करके भी प्राप्त कर लेना चाहिए |

विशेष- 'तत्त्वज्ञान' पद में दो शब्द हैं- तत्त्व और ज्ञान | तत्त्व शब्द अन्य लौकिक ज्ञानों के निराकरण के लिए है और ज्ञान शब्द नाना प्रकार की शरीराश्रित क्रियाओं के निराकरण के लिए है | देखा जाता है कि बहुत से लोग धर्म के क्षेत्र में आकर भी बाह्य क्रियाकांड में ही उलझकर रह जाते हैं, ज्ञान की प्राप्ति के मार्ग में नहीं लगते | तथा बहुत-से लोग ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग में आकर भी कोरे शास्त्रीय ज्ञान या लौकिक ज्ञान में ही अटककर रह जाते हैं, तत्त्वज्ञान की प्राप्ति पर ध्यान नहीं देते | परन्तु मोक्षमार्ग के लिए तो तत्त्वज्ञान ही अनिवार्य है | यही 'समयसार' की गाथा 205 और उसकी आत्मख्याति टीका के कलश 143 में भी कहा है | यथा-

गाणगुणेण विहीणा, एदं तु पदं बहु वि ण लहंते |

तं गिण्ह णियदमेदं, जदि इच्छसि दुक्ख-परिमोक्खं || -समयसार, गाथा 205

अर्थ- ज्ञान गुण से रहित बहुत जीव इस पद को नहीं प्राप्त कर सके, अतः यदि तुम दुखों से मुक्त होना चाहते हो तो इस ज्ञान गुण को ग्रहण करो |

न पदमिदं ननु कर्मदुरासदं, सहजबोधकलासुलभं किल |

तत इदं निजबोधकलाबलात्, कलयितुं यततां सततं जगत् || -समयसार कलश, 143

अर्थ- यह आत्मपद कर्म से प्राप्त होना सम्भव नहीं है और ज्ञान कला से सहज सुलभ है, अतः हे जगत् के जीवो ! तुम इस ज्ञान कला का ही सतत अभ्यास करो |

इस सम्बन्ध में कविवर बनारसीदास का निम्नलिखित दोहा भी पठनीय-मननीय है, जो उन्होंने उक्त कलश का हिन्दी-पद्यानुवाद करते हुए ही समयसार नाटक में लिखा है-

बहुविध क्रिया क्लेश सौं, शिवपद लहै न कोय |

ज्ञान कला परकास तें, शीघ्र मोख पद होय || -समयसार नाटक, निर्जरा द्वार

अर्थ- बहुत प्रकार की बाह्य क्रियाओं के क्लेश से किसी को मोक्ष पद नहीं मिलता है | ज्ञान-कला के प्रकाश से ही वह शीघ्र प्राप्त होता है |

इसप्रकार के अन्य भी अनेक उद्धरण यहाँ प्रस्तुत किये जा सकते हैं | सबका अभिप्राय यही है कि हमें जीवन में तत्त्वज्ञान के अभ्यास पर बहुत अधिक ध्यान देना चाहिए | इधर-उधर से सारा ध्यान हटाकर चौबीस घंटे तत्त्वविचार पर ही अपने उपयोग को केन्द्रित करना चाहिए | इसके बिना मोक्षमार्ग की सम्यग्दर्शन रूप प्रथम सीढ़ी भी नहीं प्राप्त होती | आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी का यह कथन भी इस सम्बन्ध में बहुत महत्वपूर्ण है-

“देखो तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचार-रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरणादि करे, उसको तो सम्यक्त्व का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इन सबके बिना ही सम्यक्त्व का अधिकारी होता है |” -मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260

इसप्रकार हम देखते हैं कि 'क्षत्रचूडामणि' और अन्य सभी ग्रन्थों में आत्महित के लिए तत्त्वज्ञान की महती आवश्यकता बताई गई है | और वह तत्त्वज्ञान अध्ययन रूप स्वाध्याय के अतिरिक्त सतत तत्त्वविचार की विशेष अपेक्षा रखता है |

सतत तत्त्वविचार की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए कविवर भागचंदजी का यह पद भी अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है | यथा-

आकुलरहित होय इमि निशदिन, कीजे तत्त्वविचारा हो ।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो ॥ आकुल० ॥ टेक ॥ १ ॥
को भव-कारण बंध कहा को, आस्रव-रोकनहारा हो ।
खिपत कर्मबंधन काहेसों, थानक कौन हमारा हो ॥ आकुल० ॥ २ ॥
इमि अभ्यास किये पावत है, परमानंद अपारा हो ।
भागचन्द यह सार जान करि, कीजे बारंबारा हो ॥ आकुल० ॥ ३ ॥

अर्थ-आकुलता-रहित होकर रात-दिन निरन्तर ऐसा तत्त्वविचार करो कि मैं कौन हूँ, मेरा क्या स्वरूप है, कौन पर है, उसका क्या स्वरूप है, संसार का कारण क्या है, बन्ध क्या है, आस्रव को रोकने वाला कौन है, कर्म-बन्ध किससे है, हमारा शाश्वत निवास स्थान क्या है, इत्यादि | इस प्रकार तत्त्वाभ्यास से जीव को अपार परमानन्द की प्राप्ति होती है। कविवर भागचन्द कहते हैं कि तत्त्वाभ्यास को सर्वश्रेष्ठ कार्य समझकर बारम्बार करो ।

इसी प्रकार एक यह कहानी भी मुझे बहुत शिक्षाप्रद लगती है- विदुषी पुत्रवधू |

कहानी का सन्देश यही है कि हमें यह बात भलीभांति समझ लेनी चाहिए कि हमने जितना समय तत्त्वविचार में लगाया है, वही सार्थक है, शेष सब व्यर्थ गया |

अन्त में, हम सभी इस दुर्लभ मनुष्य जीवन को तत्त्वविचार एवं तत्त्वज्ञान के मार्ग में लगकर सफल करें, धर्म के मार्ग में आकर भी चूक न जाएँ -इसी पवित्र भावना के साथ मैं अपनी बात पूर्ण करता हूँ |